नामांक Roll No.

No. of Questions – **15**

No. of Printed Pages – **4**

SS-26-Raj. Sah. (Supp.)

राजस्थानी साहित्य

(RAJASTHANI SAHITYA)

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2020

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों सारु सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखै ।

(2) **सगळा** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पड़ूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पड़ूत्तर देवौ ।

(7) पड़ूत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ठौड़ अंकित है ।

1. नीचे लिख्या गद्यावतरंणा री सप्रसंग व्याख्या करौ –

(क) ताहरां धाय वडारण खवासां सहेल्यां चौबोली आगै आइ उभ्यां रह्यां । थारौ बडो भाग, जु थारौ नेम ही रह्यो अर राजा भोज भरतार पायौ । ताहरां चौबोली कहै – मोनुं रीस सूं बोलाई । ताहरां बडारण समझाइ अर कह्यौ – थारै भाग में हुतो सु वर आयौ । **4**

अथवा

सुरापांन जो जो करै, सो सब भक्ष करेइ ।
दुष पावइ गहिलो हुवइ, पिण फिर पात्र भरेइ ।।
काम काज हूंती रहई, करइ अगमिय गोण ।
ज्ञान नष्ट हुइ जाइ सो, नरक पातियो होण ।।

(ख) चौधरी री सीख घणा दिनां तांई कोनी मानीजी । गढ़ जैड़ौ मकान तीन हिस्सा में बंटग्यौ । बाखळ में दो भींता खींचनै तीन हिस्सा कर दिया । खेत ई बंटग्या । जमीन बंटी जद घणी ले–दे, चख–चख होयी । रिस्तेदार भेळा होया । आपस में खींचाताण होयी । **4**

अथवा

माटी खासी ताळ तांई अबोली रैयी, अमूझबौ करी । पछै टसकती होळै–सींक बोली, "म्हारी मानै जणै तो पाणी रा घड़ा–मटकिया बणायलै, जिकै सूं सगळा री तिस बुझाय सकूं अर गांव–नगर सगळी ठौड चावी बण सकूं । जनसेवा करनै आगोतर सुधार सकूं ।"

(ग) घी दूध री नदियां बहावण री बातां करणिया आ ई भूल जावै कै जे सगळी नदियां में घी–दूध ई बैंवतौ हौ तौ बापड़ौ जळ कठै बैंवतौ ? कांई खेती–बाड़ी में सिंचाई भी घी–दूध सूं इज होया करती ही । लोग सिनान ई घी दूध सूं ई करता होवैला वां दिनां में ? **4**

अथवा

तांबै रौ कळसौ माटी रै घड़ै नै कैयौ, "घड़ा थारै में घाल्योड़ौ पांणी ठंडौ किया रैवै अर म्हारै में घाल्योड़ौ तातौ कियाँ हो ज्यावै ?" घड़ौ बोल्यौ, "म्हैं पाणी नैं म्हारै जीव में जाग्यां द्यूं हूं अर तूं आंतरै राखै, औ ही कारण है ।"

2. 'मुहणोत नैणसी' री चारित्रिक विशेषतावां नै उजागर करौ । **4**

3. 'अलेखूं हिटलर' कहाणी री मूल संवेदना आपरै सबदां मांय स्पष्ट करौ । **4**

4. लोक मानता रै मुजब 'सुख' पुण्य सूं अर 'दुःख' पाप सूं मिळै । इण कथन रौ खुलासौ करौ । **4**

5. आधुनिक साहित्य मांय हकीकत बयान करणै री प्रवृत्ति किण भांत बध रैयी है ? **4**

6. आधुनिक राजस्थानी साहित्य री कहाणी विधा माथै अेक आलेख लिखौ । **6**

7. नीचे लिख्या विषयां मांय सूं किणी **अेक** विषय माथै राजस्थानी भासा में निबंध लिखौ – **6**

(i) म्हारी वाल्ही पौथी

(ii) पे'लौ सुख निरोगी काया

(iii) राजस्थान रा तीज–तिंवार

(iv) राजस्थानी साहित्य मांय पर्यावरण चेतना ।

8. नीचे लिख्या पद्यांशां री सप्रंसग व्याख्या करौ –

(क) तुंही ज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तू परिवांण । **4**
हियड़ई भीतरि तूं वसइ, भावइं जांण म जांण ।।
हूं बळिहारी सज्जणां, सज्जण मो बळिहार ।
हूं सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार ।।

अथवा

देवी वेद रै रूप तूं ब्रह्म वांणी,
देवी जोग रै रूप मच्छंद्र जांणी;
देवी दान रे रूप बळराव दीधी,
देवी सत्त रे रूप हरचंद सीधी ।

(ख) सांवरिया म्हे कांई ऐसा भोळा जी ।। **4**
हंसि हंसि प्रीति करत औरन सूं,
म्हांसू बोलत मोळा जी ।
बींनै तो थे अगड़ घड़ावौ,
म्हां सूं मीठा न बोलो जी ।
हमां धरिगा सो लेय पधारो,
वींका ही भरज्यौ झोळा जी ।।

अथवा

समझ तमाखू सूगली, कुत्तो न खावै काग ।
ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग ।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो ।
शूकर भूंडी समझ, निपट निकळै नहिं नैड़ो ।।

(ग) टणका छा सो निमळा होयग्या **4**
निमळा राज घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ ।
म्हेलां की तो टपरी बणगी
टपरी म्हैल घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ ।

अथवा

केई हंस–हंस जी के हेज
छोड़ग्या जनवासा की सेज
खुगाळी में फांसी की याद
हे म्हारा भगतसिंह आजाद
शहीदां की गेल्यां जाज्यौ,
सायब मत आज्यौ ।।

9. 'रणमल्ल छंद' काव्य री विशेषतावां नै उजागर करौ । **4**

10. 'जसनाथजी रै सबद–साहित्य रा भाव आज रा जुग में ई घणा महताऊ है ।' इण कथन रौ खुलासौ करौ । **4**

11. 'मरण पंथ रा पंथी' कविता रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ । **4**

12. "लिछमी कविता प्रगतिसील काव्यधारा री सांवठी रचना है ।" इण कथन रौ खुलासौ करौ । **4**

13. काव्य री परिभासा देय'र काव्य रा तत्त्वां नै स्पष्ट करौ । **4**

14. 'कुण्डलियो' छंद री विशेषतावां नै उजागर करौ । **4**

15. 'उपमा' अलंकार री परिभासा देय'र उणरै भेदां नै स्पष्ट करौ । **4**